PEER REVIEWED JOURNAL
© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 07 , Issue : 10 | November - December 2020

निर्गुण काव्य और समाज सुधार

रेनु, शोधार्थी, (पी॰एच॰डी॰ हिन्दी),
कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, एम॰ए॰, एम॰फिल॰, (हिन्दी)
नेट (जे॰आर॰एफ॰), हिसार (हरियाणा)

शोध आलेख सार :–

साहित्य व सामाजिक परिवर्तन का गहरा सम्बन्ध रहा है। इसलिए साहित्य को समाज का आईना कहा गया है, क्योंकि साहित्य हमेशा तात्कालीन समाज के रीति–रिवाजों, सुख–दुःख व विभिन्न परिस्थितियों के संदर्भ में रचा जाता रहा है। देश में होने वाले परिवर्तन आमजन की मान्यताओं व विश्वासों में बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास के मध्ययुगीन काव्य के अन्तर्गत निर्गुण–काव्य का विषिष्ट स्थान है। निर्गुण कवियों ने मानव जाति को ऊँच–नीच, जात–पात, गरीब–अमीर आदि के भेद–भावों से दूर रहते हुए एक सुंदर समाज के निर्माण की ओर अग्रसर किया। ये संत कवि व्यक्तिगत सुधार के द्वारा पूरे समाज का सुधार करना अपना मुख्य उद्देश्य मानते थे। इन्होंने मानव जाति के संस्कारों में बदलाव करके समाज को स्वस्थ बनाने का भरसक प्रयास किया है।

निर्गुण शब्द का अर्थ :–

निर्गुण शब्द दो शब्दों 'निर् + गुण' के योग से बना है। इसमे 'निर्' उपसर्ग का अर्थ है– रहित। परन्तु 'गुण' का एक अर्थ न मानकर विभिन्न विद्वानों ने इसे अनेक अर्थो में लिया है। 'हिन्दी–शब्द–सागर' में गुण शब्द की व्याख्या इस प्रकार की गई है– ''किसी वस्तु में पाई जाने वाली वह बात, जिसके द्वारा वह वस्तु, दूसरी वस्तु से पहचानी जाए।''[1]

निर्गुण कवि और सामाजिक चेतना–

निर्गुण कवियों ने अपनी वाणी के माध्यम से सामाजिक चेतना को बढ़ावा दिया है। ये कवि मानव को ही देवता समान बना कर आदर्श समाज की स्थापना करना चाहते थे। तत्कालीन समाज अनेक विकारों के दलदल में धंसा हुआ था, जिनका इन संतों ने खण्डन किया और इन दुष्प्रवृत्तियों को दूर करने का हर संभव प्रयास किया, जो आधुनिक युग में भी प्रासंगिकता लिए हुए हैं।

रूढ़ियों व अन्धविश्वासों का खण्डन–

तत्कालीन समाज में व्याप्त विकृतियों ने इन निर्गुण कवियों की अन्तस्चेतना को झकझोर कर रख दिया। उन्होंने इन विकीर्ण विचारों को देखा–परखा तथा अपने काव्य में पूर्ण साहस के साथ स्थान दिया।

© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 07 , Issue : 10 | November - December 2020

इसी कारण से उनके काव्य में एक नई लहर का प्रवाह व्यक्त हुआ है। इन कवियों ने अपने काव्य में दो प्रकार की शैली अपनाई, एक खण्डनात्मक और दूसरी मण्डनात्मक। इनके खण्डन और मण्डन, दोनों तत्त्वों का सम्बन्ध हिंदूओं व मुसलमानों से रहा हैं। उस समय समाज में मिथ्याचारों को बढ़ावा देने वाले पंडित व मुल्ला ही थे जिन्होंने धर्म के नाम पर हाय–तौबा मचा रखी थी। निगुर्ण कवियों ने किसी का भी पक्ष न लेते हुए दोनों की बात मानने से इन्कार करते हुए कहा भी है :–

''पंडित मुल्ला जो लिख दिया,
छांडि चले हम, कछु न लिया।''[2]

अतः निर्गुण कवि कहते हैं कि सत्यस्वरूप उस परमपिता परमेश्वर की उपासना के लिए बाह्मडम्बरों की कोई आवश्यकता ही नहीं है। संत काव्य के प्रवर्तक कबीर दास जी ने जब इन विकृतियों को समाज में कुठाराघात करते देखा तो उन्होंने इन विकृतियों को दूर करना अनिवार्य समझा। कबीर दास जी ने हिंदुओं व मुसलमानों दोनों को फटकारा है और ईश्वर को घट–घटव्यापी बताया है। यहाँ कबीरदास जी की व्यंग्यात्मक भाषा का एक नमूना दृष्टव्य है–

''ना जाने साहब कैसा है।
मुल्ला होकर बाँग जो दैवे, क्या तेरा साहब बहरा है,
कीड़ी के पग नेवर बाजे, सो भी साहब सुनता है।''[3]

गुरू नानकदेव समाज में व्याप्त आडम्बरों व पाखंडों का विरोध करते हुए कहते हैं कि समाज में 'बगल में छूरी, मुँह में राम–राम' वाली उक्ति चरितार्थ होती है। बहुत से ऐसे लोग हैं जो वनों में रहकर नियम व्रत करते हैं तथा तीर्थ–पर्यटन करते हैं, लेकिन उनके मन पर धोखेधड़ी का आवरण चढ़ा रहता है। इस प्रकार के लोगों को वे समाज के लिए अभिशाप मानते हैं। गुरुग्रंथ साहिब में भक्ति के बाह्चारों को भी 'पाखण्डपूर्ण भक्ति' के नाम से सम्बोधित करते हुए कहा गया है कि–

''पाखंड भगति न होवई,
परब्रह्मा न पाइआ जाई।''[4]

सम्पूर्ण समाज को एक सूत्र में पिराने के लिए, इन्होंने अन्धविश्वासों व धार्मिक भेद–भाव को दूर करना अपना परम कर्तव्य समझा।

सत्य और समाज–

आदर्श समाज के निर्माण में सत्य का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि समाज का निर्माण व्यक्तियों के द्वारा ही होता है। समाज के उचित उत्कर्ष व विकास के लिए सत्य की महत्ता अति आवष्यक है। मनुष्य के शुद्ध विचारों, शुद्ध आचरण व शुद्ध वाणी से ही एक आदर्ष समाज की कल्पना की जा सकती है। संत कवियों ने समाज में पवित्रता लाने के लिए अनेक प्रयत्न किये और लोगों को समझाया कि सत्य के समान

कोई तपस्या नहीं है और असत्य वाणी से बढ़कर समाज में कोई पाप नहीं है। संत कवि कहते है कि जिस व्यक्ति के मन में सत्य होता है, वहाँ उसके हृदय में साक्षात् ईश्वर का वास होता है।

''साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हृदय साँच है, ताके हिरदै आप।।''[5]

इस प्रकार निर्गुण कवियों ने लोगों के मन में सत्य भाव को जागृत करने का प्रयास किया है, परन्तु आधुनिक समाज में झूठे व्यक्तियों की संख्या अधिक है, जबकि सच्चे व ईमानदार व्यक्तियों की संख्या बहुत कम है।

नारी विषयक दृष्टिकोण–

निर्गुण कवियों ने नारी के पतिव्रता व कुलटा दोनों रूपों की चर्चा की है। इन कवियों ने नारी के कल्याणकारी रूप की प्रंषसा की है, जबकि दादू दयाल जी कहते हैं कि कनक और कामिनी दोनों का ही साथ छोड़ देना चाहिए नहीं तो यह सारा संसार उसमें जल कर राख का ढेर हो जायेगा। पलटू साहब तो नारी की निंदा इस हद तक करते है कि वे तो मरणासन्न अवस्था में बूढ़ी नारी पर भी विष्वास न करने की सलाह देते हैं, लेकिन कहीं–कहीं पर इन कवियों ने नारी को वन्दनीय तथा पूजनीय माना है। कबीरदास जी कहते भी है कि–

''पतिबरता मैली भली, काली कुचिल कुरूप।
पतिबरता के रूप पे वारों कोटि सरूप।''[6]

अतः जहाँ कहीं भी नारी से काम–वासना अलग हो जाती हैं, वहाँ पर इन निर्गुण कवियों ने नारी को आदरणीय और पूजनीय माना है और खुल कर बड़े आदर भाव से नारी की प्रंषसा की है।

उपदेष तत्त्व एंव चेतावनी :–

निर्गुण काव्य में उपदेश तत्त्व व चेतावनी के माध्यम से कवियों ने अपने विचारों को जन–जन तक पहुँचाया है। निर्गुण कवियों से पहले गुरु गोरखनाथ भी 'चेतावनी' के माध्यम से अपने विचारों को अभिव्यक्त कर चुके थे। कबीरदास जी मानव को उपदेश देते हैं कि मानव शरीर तो क्षण–प्रतिक्षण मृत्यु की ओर अग्रसर हैं। अतः तब तक अपना जीवन साधु–सेवा में लगा देना चाहिए। ''संसार तो सेमल के फूल के समान है, केवल दस दिनों का व्यवहार है। अतएव इसके झूठे रंग को भूलना नहीं चाहिए।''[7]

इसी प्रकार दादू दयाल जी का उपदेश है कि मनुष्य को अपनापन और परायापन त्याग कर रामनाम के रंग में रंग जाना चाहिए अर्थात् उनका कहना है कि इस मिथ्या संसार में तुम खाली हाथ आए थे और खाली हाथ ही वापस चले जाओंगे। इसलिए जाग सकते हो तो जाग जाओ। अपने जीवन के लक्ष्य को सत्य व निष्ठापूर्वक प्राप्त कर लो।

आदर्ष जीवन की कल्पना–

निगुर्ण कवि ऐसे व्यक्तियों में विश्वास करते हैं, जो किसी भी प्रकार से अशान्त नहीं होते हैं वे नेकी पर चलते हुए अति सरल, जीवनायापन करते हैं। आदर्श विचारों वाला व्यक्ति सदा दूसरों का भला चाहता है। उसे किसी की निंदा करनी अच्छी नहीं लगती। वह कभी भी कड़वे शब्द नहीं बोलता है। इस प्रकार से शुद्ध विचारों वाले मनुष्य हरि की सेवा करते हैं तथा दुःख इनके पास भी नहीं फटकते हैं–

"जीवन मिरतक होई रहे, तजै जगत की आस।
तब हरि सेवा आपै करें, मति दुख पावै दास।" [8]

निर्गुण कवियों के विचार में वही व्यक्ति आदर्श है जो संसार के नियमों में बंध कर नहीं चलता और दूसरों के दुर्व्यवहार को झेल लेता है तथा जिसके हृदय में दया भाव हो, उसे ही भगवान की प्राप्ति होती है।

निष्कर्ष :–

इस प्रकार हम कह सकते है कि हिन्दी साहित्य में निर्गुण काव्य की देन सराहनीय है निर्गुण कवियों की वाणी का मुख्य उद्देश्य समाज सुधार की भावना था। समाज में व्याप्त अनेक बुराइयों को देखकर ये संत अत्यंत विचलित हो उठे। जन कल्याण के लिए उन्होंने हर सम्भव प्रयास किये। इन कवियों ने गुफाओं में तपस्या करना व वनों में घुमने को बाह्याडम्बर बताया और कहा कि ये सब ढकोसले हैं जो त्याज्य है। इन्होंने अवतारवाद का विरोध प्रबल स्वर में किया था।

निर्गुण कवियों ने समाज को विलासिता रूपी दलदल से बचाने के लिए काम की निंदा की। वे कहते है कि सत्संग द्वारा जन–कल्याण तथा सामाजिक सुधार की समस्या को सुलझाया जा सकता है, क्योंकि सत्संग के माध्यम से मानसिक वृत्तियाँ, पवित्रता को प्राप्त कर लेती है। अतः इन कवियों द्वारा समाज सुधार के प्रयत्नों को भुलाया नहीं जा सकता।

संदर्भ सूची–

1. सम्पादक, डॉ॰ श्यामसुन्दर दास, हिन्दी–शब्द–सागर (प्रथम भाग), पृ॰ स. 816
2. सम्पादक, डॉ॰ श्यामसुन्दर दास, कबीर ग्रन्थावली, पृ. सं. 206
3. डॉ॰ हजारी प्रसाद द्विवेदी, कबीर, पृ॰– 171
4. श्री गुरू ग्रन्थ साहिब, (महला) 3, पृ॰ 846
5. सं॰ डॉ॰ पारसनाथ तिवारी, कबीर ग्रन्थावली, द्वितीय खण्ड, पृ॰ 187
6. सन्त बानी संग्रह, भाग–1, पृ. 40
7. सं॰ डा॰ पारसनाथ तिवारी, कबीर ग्रन्थावली, द्वितीय खण्ड, पृ॰ 162
8. सं॰ डॉ॰ पारसनाथ तिवारी, कबीर ग्रन्थावली, पृ॰ 207